

ईश्वर अल-हकीम है - सबसे बुद्धिमान

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: [लेख तुलनात्मक धर्म यीशु](#)

द्वारा: islamtoday.net [edited by IslamReligion.com]

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

क़ुरआन ईश्वर के दो नामों का उल्लेख करता है जो भाषाई रूप से काफी एक समान है। पहला अल-हकीम (बुद्धिमान) और दूसरा अल-हाक़िम (न्यायाधीश) है। क़ुरआन में ईश्वर को 93 बार "बुद्धिमान" और छह बार "न्यायाधीश" के रूप में संदर्भित किया गया है।



उदाहरण के लिए, ईश्वर कहता है:

"वास्तव में आप सर्वज्ञ, ज्ञानी हैं।" (क़ुरआन 2:32) और "... प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ हैं" (क़ुरआन 2:129)

"वह ज्ञानी है, सर्वज्ञ है।" (क़ुरआन 6:18)

"ईश्वर बड़ा उदार तत्वज्ञ है।" (क़ुरआन 4:130)

ईश्वर स्वयं को न्यायाधीश बताता है जब वह कहता है: "क्या मैं ईश्वर के सिवा किसी दूसरे न्यायकारी की खोज करूं, जबकि उसीने तुम्हारी ओर ये खुली पुस्तक (क़ुरआन) उतारी है" (क़ुरआन 6:114)

और: "वह सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश है।" (क़ुरआन 7:87)

और जहां वह कहता है: "और नूह ने अपने पालनहार को पुकारा, और कहा: 'हे मेरे ईश्वर! नश्चिती रूप से मेरा बेटा मेरे परिवार का है! और तुम्हारा वादा सच है, और तुम न्यायियों में सबसे न्यायी हो!'"

(क़ुरआन 11: 45)

और: "क्या ईश्वर सब न्यायियों से बढ़ कर न्यायी नहीं है?" (क़ुरआन 95:8)

ईश्वर की बुद्धिमानी

बुद्धिमानी होने का अर्थ है चीजों को वैसे ही जानना जैसे वे हैं, उनके प्रतीतिदनुसार कार्य करना, और हर चीज को उसके उचित स्थान और कार्य में वहन करना। ईश्वर अपनी रचनाओं के बारे में कहता है: "और तुम देखते हो पर्वतों को, तो उन्हें समझते हो स्थरि (अचल) है, जबकि वे उस दनि उड़ेंगे बादल के समान, ये ईश्वर की रचना है, जसिने सुदृढ़ किया है प्रत्येक चीज को।" (क़ुरआन 27:88)

ईश्वर की बुद्धि इसकी रचना में देखी जा सकती है, खासकर मनुष्यों की रचना में और उसके मन और आत्मा में। ईश्वर ने हमें बताया कि उसने मनुष्य को सर्वोत्तम रूपों में बनाया था:

"हमने इनसान को सर्वोत्तम रूप में पैदा किया। फिर उसे सबसे नीचे गिरा दिया। परन्तु, जसिने विश्वास किया तथा सदाचार किया, उनके लिए ऐसा बदला है, जो कभी समाप्त नहीं होगा। फिर तुम प्रतफिल (बदले) के दनि को क्यों झुठलाते हो? क्या ईश्वर सब न्यायियों से बढ़ कर न्यायी नहीं है?"

(क़ुरआन 95:4-8)

मानव बुद्धि

ईश्वर बुद्धिमानी है जो अपने उन सेवकों को ज्ञान प्रदान करता है जिन्हें वह उचित समझता है। ईश्वर कहता है: "वह जसिं चाहता है उसे बुद्धि देता है, और जसिं बुद्धि दे दी गई, उसे बड़ा कल्याण मलि गया और समझ वाले ही शकिषा ग्रहण करते हैं।" (क़ुरआन 2:269)

ईश्वर कुछ लोगों को समस्याओं से निपटने और उसके समाधान के लिए असाधारण क्षमता देता है, ताकि वो संकट या कठिनाई के समय हर वचिर का उचित और संतुलित मूल्यांकन कर सकें। ये वे लोग हैं जनिसे दूसरे लोग सलाह लेते हैं और अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं पर उन पर भरोसा करते हैं। कुछ लोगों के पास सामाजिक मुद्दों का ज्ञान होता है। कुछ लोगों के पास पारस्परिक संबंधों का ज्ञान होता है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो आर्थिक मामलों में बुद्धिमानी होते हैं।

परामर्श का क्षेत्र आज एक महत्वपूर्ण और आवश्यक क्षेत्र है। कई सफल सलाहकारों को ईश्वर ने उनके क्षेत्र में ज्ञान, अंतर्दृष्टि और अनुभव का आशीर्वाद दिया है।

हमें यह समझना चाहिए कि ज्ञान वशिष्ट हो सकता है। एक व्यक्ति के पास जीवन के एक या एक से अधिक पहलुओं का गहन ज्ञान हो सकता है, चाहे वो हर तरह से बुद्धिमिान हो या न हो। एक अविश्वासी व्यक्ति सांसारिक मामलों में बुद्धिमिान हो सकता है, लेकिन आस्था के मामलों में बुद्धिमिान नहीं हो सकता।

ईश्वर: एक सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश

सृष्टि के सभी वषियों पर ईश्वर की प्रभुसत्ता है। यह अल-हकम नाम से व्यक्त किया गया है, जो नमिनलखिति छंद में इस्तेमाल हुआ है: **"क्या मैं ईश्वर के सिवा किसी दूसरे न्यायकारी की खोज करूं, जबकि उसीने तुम्हारी ओर ये खुली पुस्तक (कुरआन) उतारी है"** (कुरआन 6:114)

इसके अलावा, सृष्टि में उसके अधिकार और आदेश के बिना कुछ भी नहीं होता है। ईश्वर कहता है: **"उसीसे मांगते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं। प्रत्येक दिन वह एक नये कार्य में है।"** (कुरआन 55:29)

इसी तरह, ईश्वर का आदेश वधान-संबंधी हो सकता है। ईश्वर ने कुछ कर्मों को वैध और अन्य कर्मों को पाप बताया है। वह हमें कुछ प्रकार के काम करने की आज्ञा देता है और दूसरे कामों को करने से मना करता है। ईश्वर के आदेश को कोई रद्द या पलट नहीं सकता है। ईश्वर कहता है: **"वही उत्पत्तकार है और वही शासक है।"** (कुरआन 7:54)

कुरआन ईश्वर को "सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश" बताता है। इससे ईश्वर के पूर्ण न्याय और अपार दया की पुष्टि होती है। ईश्वर कभी किसी का गलत नहीं करता और कभी अत्याचार नहीं करता। वह अपने सेवकों के लिए जो कानून बनाता है वह कभी भी बोलि नहीं होता और न ही कभी अनुचति होता है। बल्कि, इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं बिना किसी पक्षपात के सभी लोगों के अधिकारों का समर्थन करती हैं: शासक और शासित, मजबूत और कमजोर, पुरुष और महिला, धर्मी और पापी, विश्वासी और अविश्वासी। यह शांति के समय और युद्ध के समय में और बिना किसी अपवाद के सभी परिस्थितियों में उनके अधिकारों का समर्थन करता है।

इसलिए मुसलमानों को सभी मामलों में मार्गदर्शन के लिए कुरआन और पैगंबर (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) की सुन्नत (शिक्षाओं) का हवाला देना चाहिए। उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन में मार्गदर्शन के लिए और राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक मामलों में मार्गदर्शन के लिए समुदायों, समाजों और राष्ट्रों के रूप में ऐसा ही करना चाहिए।

ईश्वर बुद्धमिान है और वह न्यायी न्यायाधीश है। इस्लामी मान्यताओं के अनुसार, कोई भी कभी भी दूसरे के पाप के लिए दंडति नहीं होता। ईश्वर कभी किसी के साथ अन्याय नहीं करता है। किसी भी पापी को कभी भी कएि गए पाप के दंड से अधिकि दंडति नहीं कयिा जाता है और हर अच्चे काम का इनाम दयिा जाता है।

ईश्वर कहता है: "जन्होंने वशिवास कयिा है और अच्चे कर्म कएि है, तो हम उनका प्रतफिल वयर्थ नहीं करेगे, जो सदाचारी है।" (कुरआन 18:30)

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/11062>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षति हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षति हैं।